ISSN: 2319 – 8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

*Vol. 1, Issue 1, November 2012*

# गोगाजी चौहान की लोक गाथा एवं लोक गीतों में प्रासंगिकता

**Dr Tofique Hussain**

Lecturer, Dept. of History, Govt. Girls College Sriganganagar, Jaipur, Rajasthan, India

## सारांश

गोगाजी चौहान राजस्थान के लोक देवता हैं जिन्हे जाहर पीर के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले का एक शहर गोगामेड़ी है। यहां भादों कृष्णपक्ष की नवमी को गोगाजी देवता का मेला भरता है। इन्हें हिन्दू और मुसलमान दोनो पूजते हैं। गुजरात मे रेबारी जाती के लोग गोगाजी को गोगा महाराज के नाम से बुलाते है।

गोगाजी गुरुगोरखनाथ के परमशिष्य थे। उनका जन्म विक्रम संवत् १००३ में चुरू जिले के ददरेवा(दत्तखेड़ा) गाँव में एक प्रतिष्ठित राजपूत परिवार हुआ था। पर सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोग मत्था टेकने के लिए दूर-दूर से आते हैं। कायम खानी मुस्लिम समाज उनको जाहर पीर के नाम से पुकारते हैं तथा उक्त स्थान पर मत्था टेकने और मन्नत माँगने आते हैं। इस तरह यह स्थान हिंदू और मुस्लिम एकता का प्रतीक है। मध्यकालीन महापुरुष गोगाजी हिंदू, मुस्लिम, सिख संप्रदायों की श्रद्घा अर्जित कर एक धर्मनिरपेक्ष लोकदेवता के नाम से पीर के रूप में प्रसिद्ध हुए। गोगाजी का जन्म राजस्थान के ददरेवा (चुरू) चौहान वंश के शासक जैबरजी (ठाकुर जेवरसिंह) की पत्नी बाछल कंवर के गर्भ से गुरु गोरखनाथ के वरदान से भादो सुदी नवमी को हुआ था। चौहान वंश में राजा पृथ्वीराज चौहान के बाद गोगाजी वीर और ख्याति प्राप्त राजा थे। गोगाजी का राज्य सतलुज सें हांसी (हरियाणा) तक था।[1]

लोकमान्यता व लोककथाओं के अनुसार गोगाजी को साँपों के देवता के रूप में भी पूजा जाता है। लोग उन्हें गोगाजी, गुग्गा वीर, जाहिर वीर,राजा मण्डलिक व जाहर पीर के नामों से पुकारते हैं। यह गुरु गोरक्षनाथ के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। राजस्थान के छह सिद्धों में गोगाजी को समय की दृष्टि से प्रथम माना गया है।

जयपुर से लगभग २५० किमी दूर स्थित सादुलपुर के पास दत्तखेड़ा (ददरेवा) में गोगादेवजी का जन्म स्थान है। दत्तखेड़ा चुरू के अंतर्गत आता है। गोगादेव की जन्मभूमि पर आज भी उनके घोड़े का अस्तबल है और सैकड़ों वर्ष बीत गए, लेकिन उनके घोड़े की रकाब अभी भी वहीं पर विद्यमान है। उक्त जन्म स्थान पर गुरु गोरक्षनाथ का आश्रम भी है और वहीं है गोगादेव की घोड़े पर सवार मूर्ति। भक्तजन इस स्थान पर कीर्तन करते हुए आते हैं और जन्म स्थान पर बने मंदिर पर मत्था टेककर मन्नत माँगते हैं। आज भी सर्पदंश से मुक्ति के लिए गोगाजी की पूजा की जाती है। गोगाजी के प्रतीक के रूप में पत्थर या लकडी पर सर्प मूर्ती उत्कीर्ण की जाती है। लोक धारणा है कि सर्प दंश से प्रभावित व्यक्ति को यदि गोगाजी की मेडी तक लाया जाये तो वह व्यक्ति सर्प विष से मुक्त हो जाता है। भादवा माह के शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की नवमियों को गोगाजी की स्मृति में मेला लगता है। हिंदु इन्हें गोगा वीर तथा मुसलमान इन्हें गोगा पीर कहते हैं

हनुमानगढ़ जिले के नोहर उपखंड में स्थित गोगाजी के पावन धाम गोगामेड़ी स्थित गोगाजी का समाधि स्थल जन्म स्थान से लगभग ८० किमी की दूरी पर स्थित है, जो साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा प्रतीक है, जहाँ एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी खड़े रहते हैं। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से लेकर भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा तक गोगा मेड़ी के मेले में वीर गोगाजी की समाधि तथा गोगा वीर व जाहिर वीर के जयकारों के साथ गोगाजी तथा गुरु गोरक्षनाथ के प्रति भक्ति की अविरल धारा बहती है। भक्तजन गुरु गोरक्षनाथ के टीले पर जाकर शीश नवाते हैं, फिर गोगाजी की समाधि पर आकर ढोक देते हैं। प्रतिवर्ष लाखों लोग गोगा जी के मंदिर में मत्था टेक तथा छड़ियों की विशेष पूजा करते हैं।

## परिचय

साँचोर (जालौर) किलौरियों की ढाणी में भी 'गोगाजी की ओल्डी' नामक स्थान पर गोगाजी का मंदिर है।[2]

प्रदेश की लोक संस्कृति में गोगाजी के प्रति अपार आदर भाव देखते हुए कहा गया है कि गाँव-गाँव में खेजड़ी, गाँव-गाँव में गोगा वीर गोगाजी का आदर्श व्यक्तित्व भक्तजनों के लिए सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

गोरखटीला स्थित गुरु गोरक्षनाथ के धूने पर शीश नवाकर भक्तजन मनौतियाँ माँगते हैं। विद्वानों व इतिहासकारों ने उनके जीवन को शौर्य, धर्म, पराक्रम व उच्च जीवन आदर्शों का प्रतीक माना है। लोक देवता जाहरवीर गोगाजी की जन्मस्थली ददरेवा में भादवा मास

के दौरान लगने वाले मेले के दृष्टिगत पंचमी (सोमवार) को श्रद्धालुओं की संख्या में और बढ़ोतरी हुई। मेले में राजस्थान के अलावा जम्मू व कश्मीर,पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश व गुजरात सहित विभिन्न प्रांतों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं।

जातरु ददरेवा आकर न केवल धोक आदि लगाते हैं बल्कि वहां अखाड़े (ग्रुप) में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ व उनके शिष्य जाहरवीर गोगाजी की जीवनी के किस्से अपनी-अपनी भाषा में गाकर सुनाते हैं। प्रसंगानुसार जीवनी सुनाते समय वाद्ययंत्रों में डैरूं व कांसी का कचौला विशेष रूप से बजाया जाता है। इस दौरान अखाड़े के जातरुओं में से एक जातरू अपने सिर व शरीर पर पूरे जोर से लोहे की सांकले मारता है। मान्यता है कि गोगाजी की संकलाई आने पर ऐसा किया जाता है। गोरखनाथ जी से सम्बंधित एक कथा राजस्थान में बहुत प्रचलित है। राजस्थान के महापुरूष गोगाजी का जन्म गुरू गोरखनाथ के वरदान से हुआ था। गोगाजी की माँ बाछल देवी निःसंतान थी। संतान प्राप्ति के सभी यत्न करने के बाद भी संतान सुख नहीं मिला। गुरू गोरखनाथ 'गोगामेडी' के टीले पर तपस्या कर रहे थे। बाछल देवी उनकी शरण मे गईं तथा गुरू गोरखनाथ ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया और एक गुगल नामक फल प्रसाद के रूप में दिया। प्रसाद खाकर बाछल देवी गर्भवती हो गई और तदुपरांत गोगाजी का जन्म हुआ। गुगल फल के नाम से इनका नाम गोगाजी पड़ा। गोगा जी और तुर्क आक्रांताओ का आपस में युद्ध गोगा जी का अपने मौसेरे भाई अर्जन चौहान व सुरजन चौहान के साथ कुछ जमीन के शासन को लेकर झगड़ा चल रहा था। अरजन सुर्जन इनके विरुद्ध मुसलमानों की फौज चढ़ा लाये। इन आक्रामकों ने इनकी गायों को घेर लिया, जिसके प्रतिरोध में गोगाजी ने युद्ध किया।[1,2]

गोगाजी युद्ध में चपल और सिद्ध होने के कारण रणक्षेत्र में हर कहीं दिखाई देते थे। उनके इस रणकौशल को देखकर ही महमूद गजनवी ने कहा था कि यह तो 'जाहीरा पीर' है अर्थात् साक्षात् देवता के समान प्रकट होता है। इसलिए ये 'जाहरपीर' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं।(कुछ लोग जाहर पीर का मतलब भगवान नरसिंह के वीर से जोड़ते है) राजस्थानी लोक कथा अनुसार ये युद्ध भूमि में अपने ४७ पुत्रों तथा ६० भतीजों के साथ वीरगति हुए । उत्तर प्रदेश में भी इन्हें 'जाहरपीर' के नाम से जाना जाता है। मुसलमान इन्हें 'गोगापीर' कहते हैं। गोगाजी ने गौ-रक्षा एवं तुर्क आक्रांताओं (महमूद गजनवी) से देश की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। राजस्थान का किसान वर्षा के बाद हल जोतने से पहले गोगाजी के नाम की राखी 'गोगा राखड़ी' हल और हाली, दोनों को बाँधता है। गोगाजी के 'थान' खेजड़ी वृक्ष के नीचे होते हैं, जहाँ मूर्ति एक पत्थर पर सर्प की आकृति अंकित होती है। इसलिए मारवाड़ में तो यह कहावत है कि 'गाँव-गाँव गोगो ने गाँव-गाँव खेजड़ी। ऐसी मान्यता है कि युद्ध भूमि में लड़ते हुए गोगाजी का सिर चूरू जिले के जिस स्थान पर गिरा था वहाँ 'शीश मेड़ी' तथा युद्ध करते हुए जहाँ शरीर गिरा था उसे 'गोगामेड़ी' कहा गया। गोगाजी के जन्म स्थल ददरेवा को 'शीर्ष मेड़ी' तथा समाधि स्थल 'गोगा मेडी' (नोहर-हनुमानगढ़) को 'धुरमेड़ी' भी कहते हैं।

राजस्थान के पाँच पीरों में से एक गोगाजी पश्चिमी राजस्थान के चुरू जिले में स्थित ददरेवा (राजगढ़) नामक ठिकाने के शासक जेवर चौहान के पुत्र थे। इनकी माता का नाम बाछल था। गोगाजी का जन्म प्रसिद्ध नाथयोगी गोरखनाथ के आशीर्वाद से माना जाता है। गोगाजी के समय के बारे में इतिहासकारों में अनेक मतभेद हैं। कर्नल जेम्स टॉड इन्हें फिरोजशाह तुगलक का समकालीन मानते हैं(2004: 37)। कुछेक इन्हें लोकदेवता पाबूजी का समकालीन मानते हैं। डॉ. भरत ओळा (2011: 11)एवं डॉ. भवानीसिंह पातावत (2004: 17) ने प्रामाणिक शोधों के आधार पर गोगाजी का समय ग्यारहवीं शताब्दी माना है। श्री चन्द्रदान चारण ने '*गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा*' (2005: 7-10) में गोगाजी की वंशावली के आधार पर इन्हें महमूद गजनवी का समकालीन माना है। यहाँ यह उल्लेख योग्य तथ्य है कि गोरखनाथ तथा गजनवी का समय भी ग्यारहवीं शताब्दी का रहा है(पातावत 2004: 17-19)। [3,4]

## विचार-विमर्श

गोगाजी के बारे में कथा है जो कि विभिन्न लोकगीतों और गोगा जी के जागरण में भगत समैया द्वारा गाई जाती है ।

कथानुसार 'पांडवों में एक पांडव अर्जुन हुए अर्जुन के पौत्र का नाम 'परीक्षित' था एक बार राजा परीक्षित के सिर पर कलयुग सवार हो गया तब राजा ने आखेट के समय वन में कलयुग के प्रभाव में आकर अपने एक प्रश्न का उत्तर ऋषि शमीक द्वारा परिस्थितिवश ना दे पाने के फलस्वरूप ऋषि के गले में मृत सर्प डाल दिया था । परीक्षित के इस कृत्य से अनभिज्ञ ऋषिपुत्र 'श्रृंगी' को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने श्राप दे दिया कि जिस किसी ने भी मेरे पिता के गले में मृत सर्प डाला है उसे आज से सातवें दिवस 'तक्षक' नाग डसकर मृत्युलोक पहुंचा देगा । राजा को जब यह ज्ञात हुआ तब उसने अपने लिए एक सप्ततल प्रासाद (महल) निर्मित करवाया परंतु कड़ी सुरक्षा के पश्चात भी तक्षक नाग प्रासाद में प्रवेश कर गया और राजा को सातवें दिवस डस लिया । कुछ समय पश्चात् राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय को जब यह ज्ञात हुआ कि उसके पिता को तक्षक ने डसा था तब उसने सर्पदमन यज्ञ का आयोजन किया जिसके कारण समस्त सर्पयज्ञ मे भस्मीभूत होने लगे तत्पश्चात् माता मनसा देवी के पुत्र आस्तीक के सतप्रयत्नों से नागों के प्राणों की रक्षा हुई । किंवदंती है कि जब राजा जन्मेजय की मृत्यु हुई तब नागों ने जनमेजय की आत्मा को पाताल लोक में बंदी बना लिया था, कलयुग में जब माता बाछल ने गुरु गोरखनाथ जी की सेवा की तब उनकी सेवा से प्रसन्न होकर गुरु गोरखनाथ जी ने उनको तेजस्वी पुत्र का वरदान देने के लिए पाताल लोक की ओर प्रस्थान किया वहां से वे राजा जनमेजय की आत्मा को गूगल में छुपा कर जाने लगे कहते हैं तब नाग भी उनका पीछा कर रहे थे जब गोगा जी धरती पर आए तब भी तक्षक नाग ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और उनके हाथ से गूगल छीन कर निगल गया सौभाग्य से वहां एक युवक प्रक्षालन (साफ-सफाई) कार्य कर रहा था जब उसने देखा कि साधु के हाथ से नाग ने कुछ वस्तु निगल ली है तब उसने नाग पर झाड़ू के डंडे से प्रहार किया जिसके कारण गूगल

तक्षक के मुख से नीचे गिर पड़ी गुरु गोरखनाथ जी ने गूगल उठाई और और उक्त युवक को वरदान दिया कि इस गूगल से उत्पन्न बालक बड़ा ही सिद्ध पुरुष होगा जिस के भजनों का तुम लोग गायन करोगे ऐसा कहकर गुरु गोरखनाथ जी अंतर्ध्यान हो गए । तक्षक नाग भी निराश होकर पाताल को लौट गया इस प्रकार राजा जन्मेजय ही गोगाजी के नाम से विख्यात हुए । डॉ. भरत ओळा लिखते हैं कि ऐतिहासिक पक्ष के अनुसार पिता जेवर चौहान के देहान्त के बाद गोगाजी ददरेवा के शासक बने थे(2011: 9-12)। इनका अपने मौसेरे भाइयों अरजन-सरजन से विवाद चलता था। वे गोगाजी को परास्त करने के अनेक प्रयत्न कर चुके थे पर सफलता नहीं मिली। उन्होंने गोगाजी को हराने के लिए मुस्लिम शासकों की मदद ली और गोगाजी के ठिकाने की गायें घेर ली। इसके बाद हुए युद्ध में गोगाजी के हाथों ये दोनों मौसेरे भाई मारे गये। इस युद्ध में गोगाजी भी वीरगति को प्राप्त हुए। कुछ इतिहासकार (जैसे मनोहर शर्मा एवं डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार आदि)[6]गोगाजी का युद्ध गजनवी के साथ हुआ बताते हैं। उनके अनुसार सोमनाथ मंदिर पर हमला करने जाते समय महमूद गजनवी को गोगाजी ने ललकारा और उसके साथ हुए युद्ध में गोगाजी अपने पुत्रों व अनेक संबंधियों सहित वीरगति को प्राप्त हुए थे। इस युद्ध में गोगाजी के चमत्कार देखकर गजनवी भी आश्चर्यचकित रह गया और उसने गोगाजी को 'जाहरपीर' (प्रत्यक्ष चमत्कारी) की उपाधि प्रदान की थी(ओला 2011: 9-12)। [5,6]

## परिणाम

गोगाजी का अपने मौसेरे भाइयों अर्जन व सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ता महमूद गजनवी की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए। इस युद्ध की जानकरी "रावसाल (रसावला) ग्रंथ" में मिलती है जिसके कवि मेह है।बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहरपीर (साक्षात पीर) कहा।युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेड़ी (शीषमेड़ी) कहते हैं तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी या धुरमेड़ी या गोगामेड़ी भी कहते हैं। मुख्य मंदिर – धुरमेड़ी या गोगामेड़ी - नोहर, हनुमानगढ़ गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया था।गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर 'बिस्मिल्लाह' लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है।मेला - प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्ण नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।ददरेवा, राजगढ़, चूरू व रतनगढ़ आदि क्षेत्रों में गोगाजी के मेले लगते है।थान – गोगाजी के थान को गोगामेड़ी कहा जाता है। जो इन्द्रमानगढ़ किले में स्थित है।गोगाजी की ओल्डी – किलेरियो की ढ़ानी, सांचौर (जालोर)। यहा गोगाजी का कच्चा मंदिर और इस कच्चे मंदिर को ओल्डी कहते है इसी स्थान से गोगाजी की गायों को लूटा गया था।गोगामेड़ी में भाद्रपद मास में हिन्दू पुजारी (एक माह) तथा अन्य मास में मुस्लिम (मेहर जाति) पुजारी (चायल) (11 माह) पूजा करते हैं।खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का थान माना जाता है।राजस्थानी कहावत – "गाँव-गाँव में खेजड़ी, गाँव-गाँव गोगाजी।"कवि मेह ने 'गोगाजी का रसावला' की रचना की।इस देवता को गायों व सर्पो के देवता भी कहते है।

यह गोगाजी के जीवन से जुड़ा ऐतिहासिक पक्ष है परन्तु लोक में गोगाजी की गाथा का स्वरूप इससे कहीं भिन्न है और उसका कथानक इस प्रकार है- ददरेवा शासक राणा अमरा के पुत्र जेवर चौहान का विवाह बाछल नामक स्त्री से हुआ था और बाछल की बहिन आछल का भी जेवर के परिवार में अन्य पुरूष के साथ विवाह हुआ। लम्बे समय तक बाछल और आछल के कोई संतान नहीं हुई। राजा जेवर ने किसी महात्मा के कहने से ददरेवा में नौलखा बाग लगवाया और कुआँ भी खुदवाया पर उसके बाग में प्रवेश करते ही बाग सूख गया और कूएँ का पानी खारा हो गया। इसके बाद किसी ज्योतिषि के कहने से रानी बाछल ने गुरू गोरखनाथ की आराधना में अपना मन लगाया और गोरखनाथ को योगबल से इसका पता लगा। इसके बाद वे अपने चौदह सौ शिष्यों के साथ ददरेवा आये। उनके आते ही ददरेवा का नौलखा बाग हरा हो गया और कूएँ का पानी मीठा हो गया। जेवर व उनकी पत्नी बाछल ने गोरखनाथ की खूब सेवा की। इससे प्रसन्न होकर गोरखनाथ ने बाछल को वर मांगने को कहा और नियत समय पर बुलाया। वर के समय बाछल की बहिन आछल उसके वस्त्र पहनकर गोरखनाथ के पास चली गई और उसने दो संतानों के आशीर्वाद के दो जौ के दाने प्राप्त कर लिये। इसके बाद गोरखनाथ वहाँ से दूसरे क्षेत्र में चले गये। बाछल को जब हकीकत का पता चला तो वह उनके पीछे गई। इस पर गोरखनाथ ने बाछल को कहा कि अब कुछ नहीं हो सकता। बाछल का विलाप देखकर गोरखनाथ को दया आई और उन्होंने पुनः योगबल से आराधना की और नागलोक से बासग नाग से एक पुत्र मांगकर लाये। गोरखनाथ ने बाछल को संतानप्राप्ति के प्रतीक के रूप में गूगल हवन सामग्री दी और कहा कि तुम्हारा पुत्र अत्यन्त प्रतापी होगा। रानी बाछल इस पर गूगल लेकर अपने घर आई और कुछ सामग्री निःसंतान पुरोहितनी को दी जिससे उसको 'नरसिंह पांडे' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। कुछ भाग अपनी दासी को दिया जिससे उसको भज्जू कोतवाल पैदा हुआ। बाछल ने गूगल स्वयं ग्रहण करने के बाद बचा हुआ हिस्सा घोड़ी को दिया जिससे गोगाजी का प्रसिद्ध घोड़ा 'लीलौ' पैदा हुआ। गोगा गाथा में यह जन्मप्रसंग इस प्रकार गाया जाता है-[7,8]

जन्म होया राणै गा, जन्म होया मैं वारी जन्म होया रे।

गूगा का जनम होया रे

जनम्या रे मंडली का राव

जनम होया गूगै का जनम होया रे।।

अे नीं दोड़ौ-दोड़ौ रूपा बांदी मैं वारी

दोड़ौ नीं दोड़ौ अे रूपा बांदिया

अे जी राजा जेवर बाळै जनम लिया जी

आपणै महलां सूं बांदी चाली मैं वारी

आपणै महलां सूं बांदी चाली मैं वारी

अे नीं चली आवै ओ सुंदर दाई गी पोळ

सोवै कै जागै सुन्दर दाई गी पोळ

सोवै कै जागै सुंदर दाई जी ओ

अे जी दाई बाई राजा जेवर घर चालो जी ओ

राजा जेवर कै बाळै जलम लिया जी रे हां

आंखां आंधी, जीभां तोतळी मैं वारी

कानां सूं दाई नै सुणता नांय

हाथ-पगां सूं दाई पांगळी जी रे हां

अे नीं लहंगा पहर्या गुजरात का मैं वारी

ओढ्या ओ दिखणी गा चीर

महलां सूं दाइ चालगी जी रे

हाथ लठोरी ले ली जी बांस गी जी रे हां

अे नीं चली आवै बजारो-बजार

अजी रूड़ती-पड़ती दाई आयगी जी रे हां

पहली पैड़ी पर दाई पग धर्या मैं वारी

खुल गयी पगलां गी टूंट

परचा लगावै गूगा राव।

दूजी पैड़ी पर पग धर्या मैं वारी

खुली गयी मुखड़ै गी जबान

हां रे खुल गयी मुखड़ै गी जबान।

परचा लगावै गूगा लाडला रे हां।।

तीजी पैड़ी पर पग धर्या मैं वारी

खुल गई कानां गी डाट

हां रे खुल गई कानां गी डाट।

परचा लगावै गूगा लाडला रै हां।।

अे नीं सोनल करद मंगालिया दाई नै

सोनल करद मंगाय लिया।

अे नीं लिया हो गूगै गा नाळा छील

जी ओ गूगै का नाळा छील।

अे नीं नहाय लिया गूगा राणा।

नहाय लिया जी रे हां

अे नीं कूंडै जी ओ घालो मोहर पचास-

सोनै सपारी रिपिया डेढ़ सै जी रे हां

सखियां मंगळ गाय री मैं वारी

अे नीं महलां में बाजै सोनल थाळ

मंगळस गावै सहेलियां जी रे

दानज देइयै घर गै बामणां रै

देणा जी गऊओं का दान

अे नीं देणा जी गऊओं का दान।

दानज देइयै घर के चारणां जी रे

देणां सवरण का दान

दानज देइयै घर के ढोलिया जी

देणां जी घोड़ला गा दान

अे नीं सवाई-बधाई जायर की हो रही जी।।

## निष्कर्ष

लोकसाहित्य आदिकाल से ही लोकमानस के लिए से अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। यह श्रव्य परंपरा का वह माध्यम है जिसमें ग्राम्य जीवन अपने आपको प्रकट कर सका है। भारतवर्ष लोकसाहित्य की दृष्टि से समृद्ध राष्ट्र रहा है और इसमें लिखित साहित्य के अलावा मौखिक साहित्य की भी विशिष्ट परंपरा रही है। इसके विविध प्राँतों की विभिन्न भाषाओं में लोकगीतों, लोककथाओं और लोकगाथाओं की सम्पदा लोक के कण्ठों में रची-बसी है। [9]

राजस्थान की प्राँतीय भाषा राजस्थानी में रचे लोकसाहित्य के विविध प्रकार जैसे- लोकगीत, लोकगाथाएँ और लोककथाएँ सैकड़ों वर्षों से मौखिक परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते आए हैं। ये लोकगाथाएँ राजस्थान प्राँत ही नहीं अपितु आसपास के अन्य प्राँतों में भी लोकप्रिय हैं। इनके माध्यम से लोक की आध्यात्मिक भावना के साथ-साथ श्रृंगार रस, वीर रस आदि भी तुष्ट होते हैं। इन्हें गाने वाली गायक समुदाय परंपरागत व्यवसाय के रूप में इन्हें अपनाये हुए हैं। युवा होने के बाद गोगाजी का विवाह राजा सिंझा की पुत्री सरियलदे के साथ हुआ। अपने पिता के देहान्त के बाद गोगाजी ददरेवा के शासक बने। शासक बनने के बाद उनका अपने मौसेरे भाइयों अरजन-सरजन (लोकप्रचलित शब्द 'जोड़ा' अर्थात् जुड़वाँ) के साथ विवाद चलने लगा। एक दिन दोनों भाइयों ने गोगाजी की पत्नी सरियल का अपमान किया। उसने अपनी सास बाछल से उक्त बात कही। इसके बाद गोगाजी का अपने मौसेरे भाइयों से युद्ध हुआ और गोगाजी ने उनको मार दिया। दोनों पर विजय-प्रतीक के रूप में गोगाजी उनके सिर थाल में सजाकर महल में प्रविष्ट हो रहे थे तभी उनकी माता बाछल ने अपनी बहिन के पुत्रों के शीश पहचान लिए। इसके बाद वे विलाप करने लगी और क्रोध में गोगाजी को बारह वर्षों का देशनिकाला दे दिया। इसके बाद गोगाजी ददरेवा छोड़कर अपने गुरू गोरखनाथ की तपोभूमि गोरखटीला क्षेत्र (वर्तमान गोगामेड़ी ग्राम, हनुमानगढ़) के बीहड़ में आ गए।

समय बीतने के उपरान्त गोगाजी चोरी-छुपे रात्रि में अपनी पत्नी से मिलने ददरेवा के महलों में भी जाने लगे। एक पर्व के अवसर पर गोगाजी की पत्नी ने श्रृंगारिक वेशभूषा धारण कर रखी थी जिसे देखकर गोगाजी की माता बाछल ने उसे टोका। लोकलज्जा के कारण गोगाजी की पत्नी ने उनके आते रहने का खुलासा कर दिया। इस पर माता बाछल ने गोगा के पत्नी से मिलने के उपरान्त प्रस्थान करते समय घोड़े की लगाम पकड़कर रोका और उनसे रहने का आग्रह किया। गोगाजी अपनी माता की तरफ पीठ करके बैठ गये और माता से घोड़े की लगाम छोड़ने का निवेदन किया पर बाछल ने लगाम नहीं छोड़ी। अनेक प्रयत्न करने के उपरांत गोगाजी माता के हाथ से लगाम छुड़वाकर वहाँ से निकल कर अपनी आश्रयस्थली गोरखटीला वापिस आ गए। यहाँ आकर उन्होंने गुरू गोरखनाथ का आह्वान किया और वचनभंग के प्रायश्चित के रूप में धरती में समा जाने की इच्छा जाहिर की। इस पर गोरखनाथ प्रकट हुए और इस क्षेत्र की बारह मील भूमि को इस लायक माना। इसके बाद गोगाजी ने धरती से अपने भीतर समा लेने का आग्रह किया और वे घोड़े समेत धरती के भीतर समा गए। उनकी पत्नी धरती पर शेष रहे उनके वस्त्रों के साथ सती हो गयी। यह प्रसंग गाथा में इस प्रकार गाया जाता है-[5,6]

धरती माता तूं बड़ी

म्हनै तूं दे दे बराड़

जाओ थे मक्का पढो रे कलमा

हिन्दू रा होवो मुसळमान

पांचू तो पीर भेळा होयग्या

गोगै नै कलमा पढाय

लीलो तो घोड़ो हिणकतो आवै

पातळियो असवार

फाटी तो धरती दिया रे बराड़ा

गोगो धरत समाय।

उक्त लोकगाथा में गोगाजी की ऐतिहासिकता के साथ अनेक काल्पनिक प्रसंग जुड़ गए हैं जो प्रत्येक लोकप्रिय पुरूष के कथानक में होना स्वाभाविक है। श्रद्धा और आस्था के कारण गोगाजी की गाथा के साथ नाना प्रकार के अंश मिलते हैं और इन्हीं प्रसंगों को समेटे यह गाथा राजस्थान के साथ-साथ हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश और हिमाचल प्रदेश के भागों तक गाई जाती है। इन क्षेत्रों से श्रद्धालु यह गाथा गाते हुए गोगाजी की मेड़ी (मन्दिर) गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) और ददरेवा (चुरु) स्थित 'शीशमेड़ी' तक भाद्रपद (अगस्त) की दोनों अष्टमी व नवमी तिथि को आते हैं। इसके अलावा राजस्थान व समीपवर्ती राज्यों के गाँवों में गोगाजी की मेड़ी (मंदिर) देखे जा सकते हैं। इन पर समय-समय विशेषकर भाद्रपद (अगस्त) माह में गोगाजी के रात्रि जागरण आयोजित होते हैं जिनमें गोगाजी की लोकगाथा 'गोगाजी रो झेड़ो' का गायन होता है। यह गाथा अत्यन्त मनमोहक है और इसे सुनकर श्रोता भावविभोर हो जाते हैं। अनेक श्रोताओं को तो गाथा के भावों के अनुरूप 'भाव' (स्थानीय शब्द घोट) आ जाते हैं जिसे वे नाचकर व लोहे की बनी सांकल आदि खाकर प्रकट भी करते हैं। गोगाजी की विशेष आराधना भाद्रपद माह की सुदी नवमी को की जाती है जिस दिन दूध को जमाया नहीं जाता है और उनके नाम को समर्पित करते हुए घरों में खीर आदि बनाई जाती है। किसान भी बुवाई के समय लोकदेवता गोगाजी के नाम की राखड़ी (रक्षासूत्र) हल पर बांधते हैं और उन्हें सांपों आदि से रक्षा करने वाला देवता मानते हैं। गोगाजी साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक के रूप में राजस्थान के साथ-साथ समीपवर्ती प्रांतों में भी पूजे जाते हैं।[7,8]

[1] बगड़ावत गाथा के सभी पद सोहनदास चारण (2010) से उद्धृत् हैं।

[2] कामड़ जाति राजस्थान के दलित वर्ग में गिनी जाने वाली मेघवाल जाति का एक भाग होती है जो बाबा रामदेव के अनुयायी होते हैं। ये जाति लोकदेवता बाबा रामदेव के रात्रि जागरण आदि में गायन और नृत्य के लिए पश्चिमी राजस्थान में बेहद लोकप्रिय है।

[3] तेरहताळी नृत्य को बाबा रामदेव के रात्रि जागरण के समय कामड़ जाति की स्त्रियों द्वारा हाथों-पैरों में घुँघरू तथा मंजीरों के साथ किया जाता है। यह नृत्य बैठी अवस्था में किया जाने वाला एकमात्र नृत्य है। समय के साथ इसमें सिर पर मटके उठाकर झूमने जैसी कलाएँ भी जुड़ गई हैं।

[4] फड़/पड़ लोकगाथाओं का चित्रांकन है जो जूट अथवा टाट के कपड़े पर बनाई जाती है और इसका रंग बेहद आकर्षक होता है। पड़/ फड़: फड़ वाचन, गायन तथा नृत्य का मेल है। इसमें कपड़े पर बने चित्रों की विभिन्न मुद्राओं की तरफ संकेत करते हुए संगीत के साथ नृत्य किया जाता है। राजस्थान में पाबूजी की फड़,देवनारायण जी फड़ तथा रामदेवजी की फड़ प्रसिद्ध है। [9]

## संदर्भ


1. Rajasthan [district Gazetteers].: Ganganagar (1972)
2. ↑ "गोगा जी का इतिहास : गोगाजी की कथा - News Beats" (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2010-09-09.
3. ओला, भरत. *गोगा गाथा,* प्रथम संस्करण. चुरू (राजस्थान): एकता प्रकाशन, 2011.
4. चारण, चन्द्रदान. *गोगाजी चैहान री राजस्थानी गाथा,* प्रथम संस्करण. जोधपुर (राज.): राजस्थानी ग्रंथागार, 2005.
5. चारण, सोहनदान. *राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन,* द्वितीय संस्करण. जोधपुर (राज.): राजस्थानी ग्रंथागार, 2010.
6. टॉड, जेम्स. *राजस्थान का इतिहास,* तृतीय संस्करण. जयपुर (राज.): श्याम प्रकाशन, 2004.
7. पातावत, भवानीसिंह. *आस्था रौ उजास,* प्रथम संस्करण.चैपासनी, जोधपुर (राज.): परमवीर, 2004.
8. भारद्वाज, शांति. *राजस्थानी संस्कृति एवं परंपराएँ,* प्रथम संस्करण. कोटा (राज.): वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, 2005.
9. स्वामी, नरोत्तमदास. *ढोला-मारू रा दूहा,* चतुर्थ संस्करण.जोधपुर (राज.): राजस्थानी ग्रंथागार, 2010.